ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

भारतीय ग्रन्थरत्न उपजीव्य काव्य महाभारत में राष्ट्रीय भावना एवं साम्राज्य भावना की प्रासंगिकता – एक साहित्यिक अध्ययन

[1]डा0 कान्ती शर्मा

[2]एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिरसागंज, फिरोजाबाद।

Received: 08 May 2019, Accepted: 11 May 2019 ; Published on line: 15 May 2019

Abstract

प्रस्तुत लेख ''भारतीय ग्रन्थरत्न उपजीव्य काव्य महाभारत में राष्ट्रीय भावना एवं साम्राज्य भावना की प्रासंगिकता– एक साहित्यिक अध्ययन'' के अन्तर्गत उपजीव्य काव्य महाभारत में राष्ट्रीय भावना तथा साम्राज्य भावना का विश्लेषण किया गया है। लेख में शय्यासीन भीष्म के साथ युधिष्ठिर संवाद में वर्णधर्म, आश्रम धर्म, राष्ट्र रक्षा, सैन्य व्यवस्था, धार्मिक अनुष्ठानों के सथ राजा के कर्तव्यों पर विस्तार से संवाद प्रस्तुत किया है। भारतीय उपजीव्य काव्यों में आत्मिक तत्व विद्यमान है। जो धार्मिक, सांस्कृतिक तथा दार्शनिक विचारधारा के त्रिवेणी संगम हैं। लेख में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के बल पर राष्ट्र रक्षा को महत्व देते हुए स्वर्गगमन की कामना की गयी है। लेख में तीर्थों तथा यज्ञों के महत्व को यथा विवेचित किया गया है।

गायों पर महर्षि च्यवन तथा नहुष के उपाख्यानों को प्रतिष्ठित कर विराट, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव द्वारा गौरक्षा हेतु त्रिगर्तराज सुशर्मा को परास्त करने का प्रसंग लेख में उद्घृत किया गया है। कौरवों पर पांडवों द्वारा विजय का प्रसंग यथा विवेचित है। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में चीन, लंका तथा यवनों द्वारा अधीनता स्वीकार कर भाग लेना साम्राज्यवादी नीति का पक्ष पोषण करता है वहीं युधिष्ठिर द्वारा अश्वमेध यज्ञ का सम्पूर्ण भारत विजय अभियान महाभारत में राष्ट्रीय भावना को पूर्ण परिलक्षित करता है। लेख में वेद व्यास द्वारा राजा को शिक्षा प्रदान करना भी राष्ट्रीय भावना का द्योतक है। प्रमाणिक प्रसंगों उद्धहरणों को यथा विश्लेषित कर लेख को पूर्ण मौलिकता प्रदान की है।

प्रस्तावनाः– प्रस्तुत लेख ''भारतीय ग्रन्थ रत्न उपजीव्य काव्य महाभारत में राष्ट्रीय भावना एवं साम्राज्य भावना की प्रासंगिकता – एक साहित्यिक अध्ययन'' में राष्ट्रीय भावना के प्रेरक तत्वों पर विचार प्रकट किया गया है। लेख में वेदव्यास द्वारा उद्घृत प्रसंगों को यथा विवेचित किया गया है। लेख में शय्यासीन भीष्म –युधिष्ठिर संवाद, पुलस्त्य –भीष्म संवाद, धौम्य–युधिष्ठिर संवाद के विवेचन के साथ

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

वर्णाश्रम धर्म तथा आश्रम धर्म की महत्ता पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला गया है। लेख में राज के कर्तव्य, राष्ट्र की समृद्धि हेतु राज का दायित्व , राजा द्वारा धार्मिक अनुष्ठानों ,यज्ञों का आयोजन यथा विवेचित है। राजसूय यज्ञ तथा अश्वमेध यज्ञ के साथ गौ–रक्षा, सैन्य शक्ति, राष्ट्र की आन्तरिक व बाहय सुरक्षा को विश्लेषित कर लेख की मौलिकता को प्रमाणिक आधार प्रदान किया गया है।

उपजीव्य काव्य :–

उपजीव काव्य– जिन ग्रन्थरत्नों से अनेक साहित्यकारों की साहित्य सम्पदा को आधार मिलता है। जीवंत स्वरूप मिलता है इन्हें भारतीय दृष्टि से 'उपजीव्य काव्य' की संज्ञा प्रदान की जाती है। इन ग्रन्थों की महत्ता को स्पष्ट करते हुए पाश्चात्य विद्वानों /मनीषियों ने इन्हें 'एपिक ऑफ ग्रोथ' जैसा विशेषण प्रदान किया है।

भारतीय उपजीव्य काव्य :– भारतवर्ष में रामायण, महाभारत तथा मद्भागवत को उपजीव्य काव्य माना गया है। जिन्हें प्रमाणिक होने के साथ विशाल होने का गौरव प्राप्त है। इन तीनों ग्रन्थों में भारत की आत्मा निवास करती है।, जिसमें संस्कृति, नीति, धर्म, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, कला, राष्ट्रीयता आदि मौलिक रूप विहित व संरक्षित हैं। जिसमें संस्कृति के साथ, धार्मिक मर्यादा तथा दार्शनिक विचार का त्रिवेणी संगम अवलोकित किया जा सकता है। एसे ही ग्रन्थ राष्ट्र के अक्षय जीवन स्रोत होते हैं। जो राष्ट के परिचायक, अनुपम निधि, गौरव, आराध्य, प्रकाश, प्राण के साथ आत्मा स्वरूप होते हैं। यदि इन ग्रन्थ रत्नों को सर्वस्व कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इन ग्रन्थों की साहित्यिका सुधा के अपने उत्स जहां स्व राष्ट्रनुरागी रससिद्ध साहित्यकार अपनी संवेदना के अनुरूप कथानक का आहरण कर अपनी प्रतिभा के बल पर नियतिकृति नियमरहिता, हृादैकमयी अनन्य परतंत्रता एवं नवरसरूचिरा साहित्य सर्जन करते हैं। जिससे देश की साहित्यिक सम्पदा में स्पृणीय श्रीवृद्धि होती है। और राष्ट्रीय चरित्र एवं धार्मिक गौरव का विकास होता है। फलस्वरूप व्यक्तियों में अपने राष्ट्र के प्रति आत्मीयता अनुराग, आदर स्वाभिमान एवं कर्तव्य की क्रियाशील भावना का उदय और उद्रेक होता रहता है। जो राष्ट्र की सार्वभौम प्रतिष्ठा के लिए परम आवश्यक भी होता है।

प्रस्तुत लेख में भारतीय उपजीव्य ग्रन्थ महाभारत में राष्ट्रीय भावना का अध्ययन अपेक्षित है।

महाभारत में वर्णित राष्ट्रीय भावना :– अति विशालकाय वीर काव्य जिसे एक लाख श्लोकों द्वारा सुनिवद्ध किया है। जिसमें भारतवर्ष के प्राचीन वैभव एवं गौरव का लोमहर्षक इतिहास मिलता है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

महर्षि वेदव्यास द्वारा इस उपजीव्य काव्य महाभारत का सृजन किया गया है। इस वीर काव्य में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरूषार्थों से सम्बन्धित साहित्य उपलब्ध होता है। महाभारत को मानवीय भावमणियों का कोषागार कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी।

महाभारत काव्य में राष्ट्रीयता की भावना बलवती है जिसमें महाभारत के पात्रों में भारतीय प्रजा की रक्षा हेतु तथा राजसत्ता की उपादेयता पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। वीरकाव्य महाभारत में राष्ट्र की सुख समृद्धि हेतु सतत् जागरूक राजा की प्रशंसा तथा राष्ट्र को अनुकरणीय राष्ट्र बनाने के प्रयत्नों की सराहना हुई है।[1]

महाभारत में वर्णाश्रम तथा आश्रम व्यवस्था :– शैय्यासीन भीष्म पितामह के मुख से चारों वर्णों– ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य एवं सूद्र के कर्तव्यों के साथ धर्म निर्वहन का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। साथ ही आश्रम व्यवस्था ब्रहमचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास के आध्यात्मिक प्रभाव को यरोचकता पूर्ण ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया है। जो पवित्र भारतीय गौरवशालिनी भारतीय राष्टीयता का परिचायक कहा जायेगा।[2]

महर्षि वेदव्यास द्वारा अखण्ड भारत पर विचार :– महर्षि वेदव्यास ने अपने देशवासियों के विभिन्न भूभागों पर अवस्थित तीर्थों के प्रति आस्था रखने और अदम्य उत्साह के साथ उनका दर्शन करने की रोचक प्रेरणा देकर देशवासियों में देश के प्रति आत्मीयता और अखण्डता के भाव भर दिये जो वर्तमान कालीन राष्टीय भावना के ही प्रतिरूप हैं।[3]

वनपर्व में वेदव्यास ने नारद–युधिष्ठिर संवाद, पुलस्त्य–भीष्म–संवाद तथा धौम्य –युधिष्ठिर संवाद के माध्यम से देश के पावन तीर्थों की महिमा, तीर्थ प्रक्रिया तथा उनके प्रतिफल का सविस्तार वर्णन कर भारतीय आत्मा के स्वरूप को उजागर किया है। तथा राष्टीय भावना को पुष्ट किया है।

महाभारत में गायों का महत्ता :– महाभारत के अनुशासन पर्व में गौओं के उद्भव उनके श्रेष्ठतव पर तथा मुक्ति युक्त प्रकाश डाला गया है। इस सन्दर्भ में महर्षि च्यवन और राजा नहुष का उपाख्यान स्मरणीय है। जिसमें गोदान की महिमा की सर्वोत्कृष्टता के साथ गौ–सेवा को स्पृणीय सुख समृद्धिदायक बताया है। फलस्वरूप गौ भक्ति, गौ–सेवा, गोदान और गौ–रक्षा को भारतीयता का प्रबल प्रतीक माना जाता है।[4] गौ–सेवा के सम्बन्ध में विराट, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव आदि द्वारा त्रिगर्तराज सुशर्मा की विशाल सेना को परास्त करके अपने अपहृत गोधन की रक्षा की कथा ता अकेले वृहन्नला (अर्जुन)

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

द्वारा भीष्म, द्रोण, कृप, कर्ण, अश्वत्थामा आदि द्वारा सुरक्षित कौरव सेना को पराजित करे विराट के गोधन की रक्षा करने की रोमांचक कथा उल्लेखनीय है।[6] महर्षि व्यास ने अपने राष्ट के गोधन की रक्षा हेतु प्राणों की बाजी लगा देने की प्रशंसा की है और अपने बड़े–बड़े लाभोन्मुख संकल्प ' किंवा गूढ़तम योजना' की भी उपेक्षा कर देने को अच्छा ही बताया है।

भीष्म का शैय्या उपेदश :– शरशय्याशयान भीष्म पितामह ने राजा युधिष्ठिर को राजधर्म का उपदेश देते हुए राष्ट्र के सम्बन्ध में परम उपयोगी तथ्यों पर प्रकाश डाला है। राजा और राष्ट्र का किस प्रकार अम्युदय और पराभव सम्भव है पर प्रकाश डाला गया है। दोनों पहलुओं पर भली भॉति प्रकाश डालते हुए युधिष्ठिर को अभ्युदयकारी नीति का अनुसरण करने की सलाह दी है। युद्ध काल में सैन्य संचार व्यवस्था तथा शत्रु विजय के प्रकारों पर प्रकाश डाला गया है। राजा को राष्ट्र रक्षा का संदेश सुनाया है।[6] राष्ट्र की रक्षा, सुरक्षा, आन्तरिक रक्षा आदि के प्रति धार्मिक तथा आर्थिक स्थिति में सुधार और निखार लाने की बात पूर्ण मनोयोग द्वारा व्यक्त की गयी है।

महर्षि वेदव्यास ने भारत और भारतीयता पर आस्था और गौरव भावना को प्रबलता प्रदान करने के लिए भारतवर्ष का परिचायक वर्णन किया । इसी प्रसंग में पवित्र नदियों और जनपदों का उल्लेखनीय विवरण है जो भारतीय गरिमा का सूचक है। जो निश्चित रूप से पाठकों के चित्तपटल पर भारतीयता के प्रति स्वाभिमान के भाव को अंकित कर देता है।[7]

महाभारत में यज्ञों द्वारा राष्टीय भावना को प्रबलता प्रदान करना :–

राष्ट्र में राजाओं द्वारा यज्ञों को आहूत करना राजा आध्यात्मिक कर्तव्य था यज्ञ से यह कामना की जाती थी कि यज्ञ की आहूतियों में राष्ट्र की अन्न धन समृद्धि तथा राष्ट्र की प्रजा का सर्वकल्याण सम्भव है। इसी को आधार मानकर भगवान कृष्ण की प्रेरणा से महाभारत में युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ किया गया। भगवान कृष्ण की प्रेरणा से महाभारत में युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ के बाद सम्राट की पद्वी प्राप्त करने का सविस्तार उल्लेख है। युधिष्ठिर की लालसा थी कि यज्ञ इन्द्रलोक में सुखभोगने तथा सम्राट की महनीय पद्वी प्राप्त करना चाहिए जिसका माध्यम राजसूय यज्ञ है। भगवान कृष्ण, भीमसेन, अर्जुन, सहदेव तथा नकुल ने यज्ञ आयोजन में पूर्ण सहयोग प्रदान किया। सम्पूर्ण दिग्विजय के उपरान्त राजसूय यज्ञ में चीन, लंका, और यवन राजाओं ने पाण्डवों से परास्त होकर अधीनता स्वीकार कर शामिल हुए थे।[8]

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

महाभारत काल में अश्वमेध यज्ञ :– महाभारत में अश्वमेध यज्ञ का सविस्तार वर्णन है। कौरवों से विजय श्री प्राप्ति उपरान्त वेद व्यास की आज्ञा तथा श्रीकृष्ण की संस्तुति के आधार पर युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया जिसमें अश्व की रक्षा हेतु अर्जुन ने सेना सहित प्रस्थान किया था । सम्पूर्ण भारत के राजा महाराजाओं को विजित कर पाण्डवों के साम्राज्य को पुष्ट किया।[9]

एवं भारतवर्षं स्वं राजा स्वर्गं सुरेन्द्रवत।

शशस विष्णुना सार्धं गुप्तें गाण्डीवधवन्धना।।[10]

महर्षि वेदव्यास युधिष्ठिर के शासन के सम्बन्ध में व्यक्त करते हैं कि युधिष्ठिर सम्पूर्ण भारत वर्ष पर शासन करते हैं।

राजा के कर्तव्यों राष्ट्रीय भावना :– वेदव्यास की शिक्षा कि गणतंत्र को पारस्परिक एकता, निर्लोभता तथा सहनशीलता का व्यवहार करना चाहिए इसी आधार पर उन्होंने गणतंत्र 'किंवा संघतंत्र' के दायित्वों पर प्रकाशपात किया है। राजा को अपनी सैन्य शक्ति स्वस्थ, संतुष्ट तथा प्रसन्नचित रखकर प्रगति मीमांसा करते रहना चाहिए। राजा द्वारा जनता को न्याय, दण्ड और रक्षा की प्रत्याभूति प्रदान कर समष्टि की प्रगति एवं अभ्युदय हेतुं क्रियाशील होकर व्यष्टिवाद को समाप्त करना चाहिए। गणराज्य के नागरिकों तथा कर्णधारों का कर्तव्य है कि राज्य में दुर्भावना न पनपने दें जो राष्ट्रीय भावनात्मक सत्ता के लिए घातक हो ।

उपर्युक्त लेखों में आये प्रसंगों से स्पष्ट होता है कि महाभारत में राष्ट्रीय भावना तथा साम्राज्य भावना प्रबल रूप से प्रतिष्ठित थी।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. *महाभारत, आदि पर्व, 103/11/104/11/104/11/104/44–45,108/1–26, शान्ति पर्व 67/1–17*
2. *शांतिपर्व अध्याय 60–66, 188–189, 191–192, आश्वमेधिक पर्व अध्याय 45–46*
3. *वनपर्व अध्याय 81–97*
4. *अनुशासन पर्व, अध्याय 66,71–83, आश्वमेधिक पर्व अध्याय 92*

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

5. विराट पर्व, अध्याय 30–67
6. शान्तिपर्व अध्याय 67–71, 87–90, 94, 100, 103, 120, 130–133
7. भीष्म पर्व अध्याय – 312
8. सभापर्व अध्याय 12–47
9. आश्वमेधिक पर्व अध्याय 71–89
10. वही पृ0 14/47